[Social Issues and Environmental Problems,Vol.3 (Iss.9:SE): Sep, 2015] ISSN- 2350-0530(O) ISSN- 2394-3629(P)
Impact Factor: 2.035 (I2OR)
DOI: https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v3.i9SE.2015.3263

INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCH – GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository

पर्यावरण संरक्षण (संगीत के माध्यम से)

अर्चना परमार
शासकीय कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय, उज्जैन

मानव शरीर पंच तत्वों– प्रथ्वी, जल, वायु, अग्नि और आकाश से ही बना है। ये सभी तत्व पर्यावरण के धोतक है। प्रकृति मे मानव को अनेक महत्वपूर्ण प्राकृतिक सम्पदायें भी है। जिसका उपयोग मनुष्य अपने दैनिक जीवन में करता आया है जैसे– नदियाँ, पहाड़, मैदान, समुद्र, पेड़–पौधे, वनस्पति इत्यादि। प्रथ्वी पर प्राकृतिक संसाथनों का दोहन करने से प्राकृतिक संसाथनो के भण्डार तीव्र गति से घटते जा रहे है, जिससे पर्यावरण में असन्तुलन बढ़ रहा है। उसके परिणाम स्वरूप जल की कमी, ओजोन परत में छेद का पाया जाना, वनों की अत्यधिक कटाई से वनों की कमी आना, समुद्रों का जल स्तर बढना, ग्लेशियरों का पिघलना, रेगिस्तानों का बढना आदि हो रही है, जिससे जल, वायु, अन्न, प्रकृति सब प्रदूषण का शिकार हो रहे है। और समूची मानव आदि के साथ पशु–पक्षी, वन्य–प्रजाती व प्रकृति भी प्रभावित हो रहे है।

वनो की अत्यधिक कटाई से प्रथ्वी के मौसम में निरन्तर बदलाव आ रहा है। तापमान में वृद्धि हो रही है। "नासा के जेम सई ने 1960 से 1987 तक के तापमान के विश्लेषण से भू–मंडल के औसत तापमान में 0.5 डिग्री सेल्सियस से 0.7 डिग्री सेल्सियस वृद्धि की बात कही है।"(1) वैज्ञानिको द्वारा बार–बार चेतावनी दी जा रही है एवं हम आये दिन भीषण समुद्री तूफानो–सुनामी, हायन, उहोर, कैटरीना को प्रत्यक्ष रूप से देख रहे है।आये दिन भूकंपो का सामना कर रहे है।

प्राचीन काल से ही हमारे देश में नदियों, पहाड़ों, पेड़–पौधों यहाँ तक की पशु–पक्षियों को पूजने की परम्परा रही है। हमारे पर्व त्यौहारो में भी श्रृंगार एवं आन्दोत्सव के रूप में प्रकृति–पूजन परंपरा है। इन उत्सवो के माध्यम से जाने अनजाने ही हमें प्रकृति से प्रेम पर्यावरण संरक्षण, पर्यावरण जागरूकता के संदेश दिये जाते रहे है। इन उत्सवों में संगीत याने गायन/वादन, नृत्य भी परंपरा रही है जिनके द्वारा जन–जन अपना आंनद उल्लास प्रकट करके प्रकृति के प्रति आभार प्रकट किया करते थे।

सृष्टि के क्रम में सर्वप्रथम आकाश की उत्पत्ति हुई। आकाश का गुण नाद है और नाद ही संगीत का मूलाधार है और जब स्वरों के माध्यम से रागो की प्रस्तुति होती है तब उनकी शक्तियों का दर्शन कराने वाले सिद्ध पुरूष– तानसेन, बैजूबावरा का उल्लेख हमें इतिहास में मिलता है। तानसेन द्वारा राग दीपक का गायन करना, गायन से दीपकों का प्रज्जवलित होना, तथा उसकी गर्मी से तानसेन के प्राणों को जब खतरा होने लगा तब बैजू द्वारा राग मल्हार गाया गया एवं उससे वर्षा होने लगी एवं तानसेन के प्राणो की रक्षा हुई।

ये सब हमारे प्रर्यावरण के प्रति प्रेम को दर्शातें है। संगीत की शक्ति भी संगीत में पर्यावरण को बदलने तक शक्ति विधमान है।

प्रकृति के इन उपाहारों का हमने दुरूपयोग किया है। आज जिस हवा में सांस ले रहें, जो अन्न खा रहे हैं, जो पानी पी रहे हैं वह सब प्रदूषण का शिकार हैं। ध्वनि एवं वायु प्रदूषण भी अत्यधिक भयानक स्वरूप ले रहा है।

पर्यावरण संतुलन बिगड़ने से अब विश्व का ध्यान पर्यावरण संरक्षण की ओर आकृष्ट हुआ है। उसी के चलते इस दिशा में कई कार्य होने लगे हैं। इस पहल में कलकारों ने भी संगीत के माध्यम से पर्यावरण जागरूकता एवं चेतना के कई प्रयास किये हैं। ''अनेक अंतर्राष्ट्रीय पर्यावरण संरक्षण की अभिव्यक्ति की है। जिसमें सर्वाधिक लोकप्रिय गीत माइकल जेक्सन का अर्थ सॉग हिल द वर्ल्ड, मेन इन द मिरर है इसके अलावा पॉम माइनर

का मर्दर अर्थ, लिण्डा ब्राउन द ट्री, कोलीन एवं अंकत स्केवटी का सेव द अर्थ प्रमुख है।''[2] इन सभी ने अपने गीतों में पर्यावरण को सहजने, प्रदुषण से होने वाले नुकसानों को अपने गीतों में विषय बनाया है।
हिन्दी में नेशनल जॉग्रफीक चैनल द्वारा अर्थ सॉग का विडियों बनाया गया है।

''मुझे जीने दो, तुम भी जी लो
बूंद–बूंद बह जाता है बेमतलब ये पानी''।
प्यासी–प्यासी रह जाती है लाखों जिन्दगानी
तुम न करों ये गुस्ताखी ।[1]

बुहत लोकप्रिय पर्यावरण संदेश गीत है।
इसी क्रम में डोरथी रेटलेक की पुस्तक ''साउण्ड ऑफ म्यूजिक एवं प्लांटस के अनुसार'' ढोरथी ने तीन प्लांट लैब में रखें और उन्हें तीन घंटे संगीत सुनाया गया जब रिजल्ट निकालाा गया तो वो आश्चर्यजनक थ वे पौधे जिन्हें संगीत सुनाया गया था वे पौधे दुगुने बडे व स्वस्थ हो गये थे।''[2]
इसी प्रकार बच्चों की एक संस्था ''टी.एम.टी.टी. (द म्यूजिक थेरेपी ट्रस्ट की स्थापना दिल्ली, मुंबई और गुजरात में की गई है। इस संस्था में ए सोंग फार होप प्रोजेक्ट की शुरूआत 2012 में की गई। जिसमें अपराधिक प्रवृत्ति के माता–पिता के बच्चों, अनाथ आश्रम के बच्चों के लिये संगीत चिकित्सक द्वारा बच्चों को गीत लेखन व गायन का प्रशिक्षण दिया गया। छः माह के प्रशिक्षण के बाद'' बाल सहयोग सेन्टर'' के ये बच्चे स्वयं गीत लिखेन उनकी धुन बनाने में सक्षम हो गये। गीतों की सी.डी. बनाई गई जिसका कवर भी बच्चों ने डिजाईन किया।''[3] इस प्रकार संगीत के माध्यम से बच्चों की कल्पनाशीलता विचारों, स्वरों को सकारात्मकता मिली।
अब हम सभी में पर्यावरण जागरूकता की भावना आने लगी है। 5 जून को विश्व पर्यावरण दिवस के रूप में मनाया जाता है। भारत में भी इस अवसर पर 2014 में पर्यावरण गीत तो कि ''अर्थ एन्थम'' के नाम से विख्यात है जिसके रचियता अभय के. है बनाया गया है।
''Our Cosmic Oasis, Cosmic blue Pearl true most beautiful Planet in the Universe इन्सान हैं हम धरती हमारा घर''[4] जिसे विश्व की आठ भाषाओं – हिन्दी, अंग्रेजी, नेपाली, रशियन स्पेनिश, फ्रेंच, चाइनीज, अरेबिक में गाया गया है। इस गीत को ''इंडियन कौंसिल ऑफ कल्चरल रिलेशन के द्वारा तैयार किया गया है।
पर्यावरण संरक्षण के लिये आज रेडियो, टी.वी., कम्प्यूटर, फिल्मों, नाटकों, मोबाईल आदि के माध्यम से भी पर्यावरण स्वस्थ रखने व संरक्षण करने की जानकारी सुगमता में व रोचक रूप से की जा रही है। पर्यावरण संरक्षण के अनेक साधनों में से संगीत का भी एक महत्वपूर्ण स्थान है।

संदर्भ

1. *करमा 6 ए सॉग फॉर लाइफ, नेशनल जाग्रफिक चैनल*
2. *www.Music for your Plants.com*
3- *www.The music therapy rust.com*
4. *पर्यावरण अध्ययन – डॉ. नरेन्द्रमल सुराना पृ.–61*
5. *https://en.wikipedia.org/list of songs about the environment.*